गर्मियों में दुधारू पशुओं की देखभाल

ग्रीष्म ऋतु में दुधारू पशुओं की विशेष देखभाल एवं रख रखाव की आवश्यकता होती है। इस समय पर्यावरण का तापक्रम अधिक रहता है, जिसके कारण पशुओं का शारीरिक तापमान ज्यादा हो जाता है और वह तनाव में रहता है। अतः वे पर्याप्त मात्रा में आहार नहीं ले पाते और काम करने की क्षमता में कमी एवं बीमार पड़ने की संम्भावना बढ़ जाती है।

गर्मी से पशु का दुग्ध उत्पादन, दुग्ध प्रक्रमण एवं व्यावसायीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दूध की मात्रा 8-10 प्रतिशत कम हो जाती है जिससे दूध के दाम की बढ़ोतरी होती है। ऐसा नहीं की इसका प्रभाव सिर्फ मौसमी हो, अपितु पशु के औसत वार्षिक उत्पादन, दूध में प्रोटीन सामग्री ,एस.एन.एफ़ मात्रा और वसा में कमी होती है जिससे दूध की गुणवत्ता घटती है। थनैला रोग और थन में संक्रमण होने की आशंका बढ़ जाती है।

प्रजनन दर में गिरावट होने के करण गर्भपात हो सकता है और अगर गर्भधारण होता है तो कमज़ोर बच्चे के जन्म होने की संम्भावना रहती है। पशु में उत्तेजना अनियमित काल में आती है, अतः अंडाशय में सिस्ट जैसे रोग उत्पन होते है। जिससे प्रजनन गुणवत्ता अपेक्षाकृत कम होती है।
इसके अलावा अतिसार (दस्त) भी होता है।

गर्मी से पशुओं को बचाने के उपाय :-

पशुओं को गर्मी से बचाने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं को धयान में रखना चाहिए:-

1) आवास प्रबंधन –

1. प्रत्येक गाय एवं भैंस के लिए कम से कम 5.5 फीट चौड़ी और 10 फीट लम्बी पक्की जगह होनी चाहिए।
2. फर्श खुरदुरा होने के साथ नाली की सुविधा और उसके लिए सही ढलान बनायें।
3. पशुओं के आवास की छत 15 फीट ऊंची होनी चाहिए। यह ईंट या फूस की हो सकती है। छत को पुआल या पत्ते से ढकना चाहिए, इससे आवास के अन्दर गर्मी को कम कर सकते है। ध्यान रहे की पशु घर तीन तरफ से खुला हो। केवल पश्चिम दिशा में दीवार रहे। पशु घर की छत की ऊँचाई पर 3 x 1.5 फीट के खुले रोशनदान आवश्यक है ताकि ताज़ी हवा आ सके। दिन के समय खिड़की या घर के खुले भाग में बोरी ढके और पानी से समय - समय पर भिगोना चाहिए।
4. पशु घर की पश्चिमीं दीवार पर 2 फीट चौड़ी और 1.5 फीट गहरी नांद बनाए। नांद का आधार भूतल से 1 फीट ऊपर रहे। नांद के साथ स्वच्छ जल की व्यव्स्था होना आवश्यक है।
5. दोपहर के समय पशुओं को घर के अन्दर या पेड़ की छांव के नीचे रखना चाहिए।
6. पशु आवास में आसपास घास या पेड़ रहना चाहिए इससे आवास के अन्दर गर्मी कम होती है। पूर्वी दिशा में पशुओं के घूमने का क्षेत्र बना हो तथा इस क्षेत्र में 2-3 छायादार वृक्ष लगाने चाहिए। अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस के लिए पंखा आवश्यक है। बाज़ार में एसी मशीन उपलब्ध है जो स्वचालित प्रशीतलन प्रणाली (Automatic Cooling System) द्वारा पशु आवास को ठण्डा रखती है। एक मशीन 4-10 पशु के लिए पर्याप्त है।

2) पानी का प्रबंधन :-

ठण्डा साफ़ सुथरा पीने का पानी हर समय पशुओं को उपलब्ध होना चाहिए। आम तौर पर एक स्वस्थ वयस्क पशु दिन में लगभग 75-80 लीटर तक पानी पी लेता है चूंकि दुग्ध में 85% तक जल होता है, अतः एक लीटर दूध देने के लिए ढाई लीटर अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होती है। गर्मियों में पशु शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में पानी भी काम आता है।

पानी पोषक तत्वों को शरीर के विभिन्न अंगो तक पहुचने तथा मूत्र द्वारा अवांछित एवं ज़हरीले तत्वों की निकासी के लिए उपयोगी है।

दूध दोहन के 2 घंटे पहले पशु के शरीर और थन को धोएं तथा सुखएँ। पशुओं को प्रतिदिन पानी से धोना चाहिए या दिन में पशु पर 15-20 मिनट के अंतर पर पानी छिड़कने से राहत मिलती है। गर्मी में भैंस तथा गाय को दो बार अवश्य नहलाना चाहिए। अधिक दूध देने वाली गाय या भैंस के लिए पशु शाला के अन्दर स्प्रिंकलर लगा सकते है। भैंस के लिए तालाब होना महत्वपूर्ण है जिसमे भैंस कुछ देर तक रह सके। यह किफायती है और बिना किसी श्रम की आवश्यकता है। इससे भैंस की शारीरिक तापमान में कमी आती है। जब पशु पानी से बाहर आता है तो शारीरिक तापमान में तेज़ी से गिरावट आती है अतः पशु जब पानी से बाहर निकले तो उसे छाया में रखकर सुखाएं फिर आवश्यकता अनुसार गर्म जगह या धूप में रखें।

3) चारा प्रबंधन :-

गर्मी के समय पशुओं को हरा चारा देना चाहिए। पशुओं को प्रतिदिन सुबह वा शाम को दिन के ठंडे समय पर भूसा या दाना देना चाहिए। पशुओं को खनिज मिश्रण खिलाना महत्वपूर्ण है यह शरीर के पदार्थ को संतुलित बनाये रखते है। चारा और दाने का 70 : 30 अनुपात कुल पशु खाद्य में रहना चाहिए। अच्छी गुणवत्ता के दाने का मिश्रण पशुओं को खिलाना चाहिए क्योंकि गर्मियों में पशु कम खातें है। दाने का मिश्रण बाज़ार से खरीद सकते है या घर में बना सकतें है। उदाहरण के लिए –

संघटक	**मात्रा (प्रतिशत)**
गेहूँ की चोकर	20
चावल की चोकर	20
मकई	15
खली	25
अरहर की चुनी	10
मूँग की चुनी	5
खनिज मिश्रण साधारण नमक, विटामिन, सिरा	5
कुल	100

4) चराना :-

पशुओं को गर्मी के मौसम में सुबह या शाम को चराना चाहिए। दोपहर के समय पशुओं को नहीं चराये।

अगर संभव हो तो पशुओं को रात में चरा सकतें है।

अगर ऊपर बताये गये बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाए तो पशुओं को गर्मी के प्रभाव से बचा सकते है। इससे पशुओं का उत्पादन कम नहीं होगा और बीमारी से बचा सकते है।

अत्याधिक गर्मी में पशुओं में लू लगने के लक्षण कुछ इस प्रकार है।

पशु इस स्थिति में हांफता है या तेज़ी से साँस लेता है। इसके विपरीत लार गिरने जैसे लक्षण भी हो सकते है।

पैरों का लड़खड़ाना और कमज़ोरी होती है। भूख की कमी से पशु कम खाता है। तीव्र ज्वर : इसमे शरीर का तापमान बढ़ता है (102.5 ^{O}F से अधिक)। त्वचा सुखी दिखाई पड़ती है। हृदय और स्पंद दर बढ़ जाता है।

पशुओं में निर्जलीकरण (डिहाइड्रेशन) के लक्षण :-

निर्जलीकरण का प्रभाव आम तौर पर कमज़ोर एवं बीमार पशुओं में अधिक देखा जाता है। पशुओं में निर्जलीकरण के प्रमुख लक्षण कुछ इस प्रकार है :-

ऐसी स्थिति में आखें धसी हुई दिखती है। पशु के पेशाब का रंग पीला प्रतीत होता है। पशु का व्यवहार सुस्त रहता है और त्वचा रूखी होती है। शरीर में तरल की कमी होने की वजह से, त्वचा को उँगलियों से खींच कर पकड़ने से वह तुरंत सामान्य नहीं होती तथा कुछ छण के लिए त्वचा की सतह उठी हुई रहती है (tenting of skin)। शरीर के विकार भलिभाँति बाहर नहीं निकल पाते है। पाचन शक्ति ठीक नहीं होने के करण गोबर सूखा होता है। गंभीर स्थिति में कब्ज़ के लक्षण होते है।

यह समस्या उन इलाकों में ज्यादा देखने को मिलती है जहा नमी एवं तापमान दोनों अधिक होते है। 15 से 20 प्रतिशत से ज्यादा निर्जलीकरण पशुओं के लिए जानलेवा हो सकता है और पशु मूर्छित हो सकता है, तुरंत इलाज ना मिलने पर पशु की मृत्यु तक हो सकती है।

निर्जलीकरण से पशुओं को कैसे बचायें :-

पशुओं को छायादार एवं हवादार स्थान पर बांधे। पशुओं को पीने का ठण्डा पानी हमेशा उपलब्ध करायें। 10 लीटर पानी में 100 ग्राम नमक मिलाकर पिलायें।

पशुओं के लिए पंखे या कूलर की व्यवस्था करें। पशुओं को हरा चारा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करायें।

साधारण निर्जलीकरण से पीड़ित पशुओं के पानी में इलेक्ट्रोलाइट मिलाकर दिन में तीन बार पिलायें।

इलेक्ट्रोलाइट का घोल घर पर ही 20 लीटर पानी में 140 ग्राम नमक, 25 ग्राम पोटैशियम क्लोराइड और 10 ग्राम कैल्शियम क्लोराइड मिलाकर बनाया जा सकता है। निर्जलीकरण से प्रभावित पशु को दिन में 60 – 70 लीटर इलेक्ट्रोलाइट घोल 3 से 4 बार में देना चाहिये।

गंभीर निर्जलीकरण की स्थिति में निकटतम पशु चिकित्सक से परामर्श करें, या पशु चिकित्सालय, विटरनरी कॉलेज, नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर लायें।

डॉ. सलीमा अहमदी क़ादरी, डॉ.एकनाथ विरेन्द्र, डॉ. मनीष कुमार शुक्ला, डॉ. ओम प्रकाश श्रीवास्तव
पशु मादा रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय
नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा विज्ञानं विश्वविद्यालय , जबलपुर 482001